रघुवंशम् - कथासार

संस्कृत साहित्य के अग्रगण्य महाकवि कालिदास की स्तुति रघुवंशम् महाकाव्य की परम्परा में श्रेष्ठकृति के रूप में प्रथित है। रघुवंशम् कालिदास की प्रोढ़तम प्रतिभा की प्रसूति समझा गया है। विद्वानों का ऐसा अनुमान है कि संस्कृत के आचार्यों ने महाकाव्य के जो लक्षण निर्धारित किये हैं उनका आधारभूत स्रोत रघुवंशम् ही है। रघुवंशम् के 19 सर्गों में 29 सूर्यवंशीय राजाओं का न्यूनाधिक वर्णन हुआ है। रघुवंशम् की कथा इस प्रकार है -

प्रथम सर्ग में राजा दिलीप का चरित्र वर्णित है। पुत्रविहीन होने के कारण अत्यन्त दुःखित होकर दिलीप अपनी पत्नी सुदक्षिणा के सहित कुलगुरु वशिष्ठ के आश्रम में पहुँचते हैं। वशिष्ठ अपने आश्रम में नन्दिनी गौ की सेवा करने के लिए दिलीप को निर्देश देते हैं।

द्वितीय सर्ग में दिलीप की गौ-भक्ति का वर्णन है। राजा एकाग्रचित्त से नन्दिनी के परिचर्या में संलग्न हो जाते हैं। कुछ दिन बीतने पर नन्दिनी राजा की निष्ठा की परीक्षा लेना चाहती है। वह चरती हुई हिमालय की गुफा में प्रवेश कर जाती है, जहाँ एक सिंह उस पर आक्रमण कर देता है। राजा गाय की मुक्ति के लिये उससे अनुनय विनय करते हैं और सिंह को अपना शरीर अर्पण करते हैं। इस पर नन्दिनी प्रसन्न हो जाती है और पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देते हुए राजा को अपना दूध पीने के लिये कहती है। राजा आश्रम को लौट आते हैं और गुरु को सारा वृत्तान्त सुनाकर पत्नी के साथ गाय का दूध पीते हैं तथा राजधानी लौट जाते हैं।

तृतीय सर्ग में रघु के जन्म यौवराज्य तथा अश्वमेध यज्ञ में उनके द्वारा प्रदर्शित पराक्रम का वर्णन हुआ है। यज्ञ की समाप्ति पर दिलीप रघु को राजा बनाते हैं और स्वयं सुदक्षिणा के साथ तपोवन में चले जाते हैं।

चतुर्थ सर्ग में रघु के दिग्विजय का वृत्तान्त वर्णित है। पंचम सर्ग में रघु की दानवीरता का चित्रण हुआ है। रघु का राज्यकोश उनकी असीम दानवृत्ति के कारण रिक्त हो गया है। किसी समय कौत्स एक ब्रह्मचारी 14 करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ गुरु दक्षिणा के निमित्त माँगने आता है। धनपति कुबेर आक्रमण के भय से स्वर्ण मुद्राएँ बरसा देता है और विप्र कौत्स अभीष्ट धन लेकर राजा को पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देता है और लौट जाता है।

छठे और सातवें सर्गों में रघु के तनय अज का विदर्भराज की बहन इन्दुमती द्वारा स्वयंवर में चुना जाना वर्णित है। भिन्न-भिन्न देशों के राजा स्वयंवर में आते हैं किन्तु अज ही इन्दुमती को आकर्षित करता है। क्योंकि उसे सम्मोहन नाम अस्त्र एक गन्धर्व से मिला है। इस सन्दर्भ में कवि ने भिन्न-भिन्न प्रदेशों के नरेशों के व्यक्तिगत गुणों, सम्पत्ति, शौर्य तथा पूर्वजो की कीर्ति, तत्तद् भूखण्डों के सौन्दर्य इत्यादि का अत्यन्त रमणीय एवं भौगोलिक दृष्टि से नितान्त सटीक वर्णन किया है।

आठवें सर्ग में दशरथ की उत्पत्ति, इन्दुमती की मृत्यु और अज के विलाप तथा शरीर त्याग का वर्णन हुआ है। नवें से लेकर पन्द्रहवें सर्ग तक रामकथा वर्णित है। सोलहवें सर्ग में राम के पुत्र कुश के नागकन्या कुमुद्वती के साथ परिणय का वर्णन हुआ है। इसी प्रसंग में अयोध्या नगरदेवी द्वारा वर्णित अयोध्या की दुर्दशा तथा कुश के जलविहार का अत्यन्त सजीव चित्रण उपलबध होता है। सत्रहवें सर्ग में कुश के पुत्र अतिथि का चरित्र चित्रित किया गया है। अट्ठारवें सर्ग में सुदर्शन के पुत्र राजा अग्निवर्ण की विलासिता एवं दुःखद मृत्यु का भावचित्र हुआ है। इसी के साथ रघुवंशम् महाकाव्य की पूर्णता होती है।